दि. 11/4/06

हवा में

महामहिम राज्यपाल महोदया एवं
कुलाधिपति, समस्त विश्वविद्यालय,
राजस्थान, जयपुर ।

विषय : विश्वविद्यालयी परीक्षाओं में कागजों का दुरुपयोग

महोदया,

सादर प्रार्थना सहित मैं आपके सम्मुख उस समस्या को रखना चाहता हूँ जिससे राष्ट्रीय संसाधनों का दुरुपयोग हो रहा है । राजस्थान के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के परीक्षार्थियों में यह आम धारणा है कि परीक्षा में दी गई उत्तरपुस्तिका के अलावा जितने अधिक पूरक ~~उत्तर~~ उत्तरपुस्तिकाएँ (सप्लीमेन्ट्रीज) भरी जाएँगी, उतने ही अधिक अंक आएँगे । इस प्रवृत्ति का दुष्परिणाम यह हो रहा है कि अधिकांश विद्यार्थी मोटे अक्षर, ज्यादा जगह छोड़कर या दोनों ओर हाशिए बनाकर लिखते हैं । ऐसे में एक पृष्ठ पर 20 से 50 शब्द ही आते हैं और नतीजन 24 पृष्ठ की मूल उत्तरपुस्तिका के अलावा परीक्षार्थी 2-5 तक पूरक उत्तर पुस्तिकाएँ भी खराब करता है । स्पष्ट है कागज निर्माण के लिए अनावश्यक रूप से पेड़ कटते हैं ।

मुझे एक साथी ने बताया है कि मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा परीक्षार्थियों को केवल एक मूल उत्तर पुस्तिका ही दी जाती है, पूरक पुस्तिका पुस्तिका नहीं दी जाती है । यदि ऐसा सभी विश्वविद्यालयों में हो जाए तो राष्ट्रीय संसाधनों की बचत हो सकेगी तथा उच्च शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति नैतिक ज्ञान भी प्राप्त करेगा । प्रश्न पत्र निर्माताओं तथा परीक्षकों को भी इस ओर सोचना होगा ।

कृपया आप सभी विश्वविद्यालयों को इस दिशा में सार्थक पहल करने का निर्देश प्रदान करावें । यदि अधिक पूरक उत्तरपुस्तिका लेने पर 5-10 अंक काटे जाने का प्रावधान कर दिया जाए तो भी समस्या पर कुछ नियंत्रण हो सकेगा ।

धन्यवाद ।

भवदीय

S. Kataria

(डॉ. सुरेन्द्र कटारिया)
81/91 नीलगिरी मार्ग
मानसरोवर, जयपुर - 20 राज.

Scanned with OKEN Scanner